Philosophy B.A. III (Hons)

धर्मनिरपेक्षतावाद Paper – V

धर्मनिरपेक्षतावाद मानववाद से संबंधित एक विशेष दर्शन है। प्रकृतिवादी मानववाद में परंपरागत धर्म अथवा पारलौकिकता का विरोध किया जाता है। जबकि धर्मनिरपेक्षतावाद में धर्मों के प्रति उपेक्षा एवं तटस्थता की नीति अपनाई जाती है। यह सिद्धान्त ईश्वरवाद या अनिश्वरवाद दोनों को ही उपेक्षित करता है, क्योंकि वैज्ञानिक रीति से इन्हें न स्वीकार किया जा सकता है और न खंडित। धर्म संबन्धी विचारों के प्रति पूर्ण उदासीनता अपनाना ही इसवाद का प्रमुख उद्देश्य है।

धर्मनिरपेक्षतावाद अंग्रेजी शब्द 'सेक्युलरिज्म' का हिन्दी प्रति शब्द है। धर्मनिरपेक्षता का एक अवधारणा या निश्चित सिद्धान्त के रूप में उदय यद्यपि उन्नीसवी शताब्दी में हुआ, लेकिन इसकी पृष्ठभूमि यूरोप के 'पुनर्जागरणकाल' में तैयार होने लगी थी। यूरोप में सत्रहवीं तथा अठारहवी शताब्दी में विज्ञान की अभूतपूर्व प्रगति ने धर्मनिरपेक्षतावाद को सुदृढ़ आधार प्रदान किया। विभिन्न प्राकृतिक विज्ञानों में हुए क्रान्तिकारी अनुसन्धानों ने शताब्दियों से प्रचलित अनेक धार्मिक विश्वासों को मिथ्या और निराधार प्रमाणित कर दिया। इससे लोग धार्मिक विश्वासों की सत्यता में सन्देह करने लगे, जिससे मानव जीवन में ~~प्रभाव~~ धर्म का प्रभाव कम होने लगा और धर्मनिरपेक्षतावाद का प्रादुर्भाव हुआ।

सेक्युलरिज्म शब्द का प्रयोग धर्मनिरपेक्षवाद और इहलौकिकता दो अर्थों में होता है

डॉ० राधाकृष्णन समेत अनेक भारतीय विचारकों के अनुसार धर्मनिरपेक्षतावाद वस्तुतः धर्म तथा अध्यात्मवाद के प्रति उदासीन न होकर, इनके अनुकूल ही है

इनके अनुसार आध्यात्मिक परंपरा को स्वीकार करते हुए सभी धर्मों के प्रति सहनशील होना तथा इन सब का समान रूप से आदर करना ही धर्मनिरपेक्षतावाद है। धर्मनिरपेक्षतावाद को धार्मिक या आध्यात्मिक का निश्चित ही स्वतोव्याघातपूर्ण है। धर्मनिरपेक्षवाद का मूल आधार इहलौकिकता है। संभवतः गाँधी जी इस महत्वपूर्ण तथ्य से भली-भाँति परिचित थे, इसी कारण उन्होंने सभी धर्मों को समानरूप से आदर करने वाले सिद्धान्त को धर्मनिरपेक्षतावाद न कहकर सर्वधर्मसमभाव की संज्ञा दी जो पूर्णतः उचित है सर्वधर्मसमभाव सिद्धान्त में धार्मिक सहिष्णुता का विचार निहित है, जबकि धर्मनिरपेक्षतावाद में धर्मों के प्रति उदासीन या तटस्थ रहने का सिद्धान्त। अतः ये दोनों सिद्धान्त अलग-अलग हैं।

वर्तमान समय में जब हम धर्मनिरपेक्षता की बात करते हैं तो प्रायः हमारा संदर्भ धर्मनिरपेक्ष राज्य होता है। यदि हम भारतीय राजनीति के सन्दर्भ में धर्मनिरपेक्षतावाद पर विचार करें तो, भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य कहा जाता है। अब प्रश्न यह उठता है कि भारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य क्यों कहा जाता है या धर्मनिरपेक्ष राज्य की अनिवार्य विशेषताएँ क्या हैं?

धर्मनिरपेक्ष राज्य कहलाने के लिए निम्न विशेषताओं का होना आवश्यक है —

(1) जिस राज्य ने संवैधानिक दृष्टि से किसी भी विशेष धर्म को राजकीय धर्म घोषित नहीं किया है।

Scanned with CamScanner

(II) देश के अन्तर्गत सभी नागरिकों को धार्मिक विश्वास, उपासना, धार्मिक आचरण, किसी धर्म को मानने, प्रचार करने तथा परित्याग करने की स्वतंत्रता निहित है

(III) धर्म के आधार पर भेद-भाव किए बिना सभी नागरिकों को आर्थिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता।

(IV) ऐसा राजा न तो किसी धर्म को संरक्षण देता है और न किसी धर्म के प्रचार-प्रसार में बाधा उत्पन्न करता है। इसके कारण तथा राजनीतिक दल भी धर्म से प्रभावित नहीं होते।

धर्मनिरपेक्षतावाद के अर्थ तथा आधारभूत सिद्धान्तों को जानने के बाद इस प्रश्न पर विचार करना आवश्यक है कि क्या भारत को वास्तविक अर्थ में 'धर्मनिरपेक्ष राज्य' कहा जा सकता है?

यह सत्य है कि भारत का कोई राजकीय धर्म नहीं है और हमारा संविधान किसी विशेष धर्म को प्रश्रय देने तथा धर्म के आधार पर नागरिकों में भेदभाव का पूर्ण निषेध करता है। इस दृष्टि से भारत नेपाल और पाकिस्तान जैसे देशों से अलग है जो किसी विशेष धर्म को राजकीय धर्म मानते हैं। इसके बावजूद वास्तविकता यह है कि भारत में ऐसे अनेक विशेषताओं का अभाव है जो किसी राज्य को वस्तुतः धर्मनिरपेक्ष राज्य बनाती है। हमारे देश में आज भी खिचड़ा कानून, राजनीति तथा सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन पर धर्म का पर्याप्त प्रभाव है। वस्तुतः

किसी भी राष्ट्र का स्वरूप अनिवार्य इसके समाज के अनुरूप होता है। भारत को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र कहना उसके सम्पूर्ण धर्मनिष्ठ जन जीवन की पूर्णतः उपेक्षा करना है।

'सेक्युलरिज्म' को एक और अर्थ में लिया जाता है वह है ~~इस~~ इहलौकिकता। धर्मदर्शन की दृष्टि से इहलौकिकता शब्द अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होता है, क्योंकि इसने समकालीन धर्मदर्शन को प्रभावित किया है।

इहलौकिकता एक ~~प्रभाव~~ प्रक्रिया है, जो धर्म विरोधी है यह सिद्धान्त धर्म में उदासीनता की बात कहता है, क्योंकि धर्म अनिवार्यतः किसी अलौकिक सत्ता पर ही आधारित रहता है, जिसे स्वीकार कर मनुष्य इस जगत तथा वर्तमान जीवन के प्रति उदासीन हो जाता है। इसलिए धर्म की उपेक्षा करनी चाहिए।

यह सिद्धान्त किसी अलौकिक सत्ता का निषेध कर केवल इहलौकिकता में ही विश्वास करता है। उसके अनुसार ईश्वर या किसी पारलौकिक सत्ता के संबंध में चिंतन करना व्यर्थ है।

इहलौकिकता बौद्धिकता का परिणाम है। यह विज्ञान के महत्व और उसकी उपादेयता में पूर्ण विश्वास रखता है। इसके अनुसार केवल विज्ञान ही मानव जीवन को सुखमय समृद्ध तथा उन्नत बना सकता है, अतः हमें उसके अध्ययन की ओर विशेष ध्यान देना चाहि

Scanned with CamScanner

इहलौकिकता की मूलभूत मान्यता यह है कि नैतिकता धर्म से पूर्णतः स्वतन्त्र है। धर्म, ईश्वर, आत्मा, स्वर्ग नरक आदि पारलौकिक सत्ताओं में विश्वास किए बिना भी मनुष्य नैतिक जीवन से दृष्टि से उत्कृष्ट जीवन व्यतीत कर सकता है। अतः नैतिकता को धर्म आधारित मानना अनुचित है। वास्तविक स्थिति यह है कि स्वयं धर्म ही नैतिकता पर आधारित है क्योंकि नैतिक मूल्यों (प्रत्ययों) को समझे बिना व्यक्ति ईश्वर को न्यायशील, दयालु आदि नहीं कह सकता।

इहलौकिकता की आलोचना निम्न बिन्दुओं पर की जाती है —

1. यह सिद्धान्त मानव जीवन के महत्वपूर्ण पक्ष धार्मिक भावना को अनदेखी करता है।
2. यह व्यक्ति नहीं बल्कि समाज की पूर्णता पर बल देता है जो एक कल्पना ही कही जा सकती है।
3. इहलौकिकता जीवन के परम लक्ष्य की व्याख्या करने में असमर्थ है।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि इहलौकिकता जीवन की सार्थकता की व्याख्या करने में असमर्थ है क्योंकि भारतीय दर्शन में मानव जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष को स्वीकार किया गया है। इसलिए इहलौकिकता सामान्य लोगों की अवधारणा नहीं बन सकती। लेकिन जहाँ धर्मनिरपेक्षतावाद को भारतीय राजनीति के परिपेक्ष्य में देखा जाए तो यह भारतीय संविधान

की मौलिक विशेषता है, जिसका वास्तविक स्वरूप प्रत्येक धर्म के प्रति तटस्थता बनाए रखना है।

- धर्मनिरपेक्षतावाद का प्रमुख प्रणेता (जार्ज जैकब होलियोक)
- धर्मनिरपेक्षतावाद के प्रबल समर्थक- चार्ल्स ब्रैडलॉफ
- होलियोक – का विचार है कि हमें इसी जगत् और मनुष्य की वर्तमान जीवन की समस्याओं का अध्ययन तथा समाधान करते समय धर्म की उपेक्षा करनी चाहिए + अर्थात उसके प्रति उदासीन रहकर उसे कोई महत्व नहीं देना चाहिए
- ब्रैडलॉफ यह मानते हैं कि इस सम्बन्ध में धर्म की उपेक्षा करना ही पर्याप्त नहीं है; उसका विरोध तथा खण्डन करना भी आवश्यक है

Dr. Saroj Ram
Dept. of Philosophy
D. K. College, Dumraon

Scanned with CamScanner